UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 20 झाँसी की रानी (मंजरी)

महत्वपूर्ण गद्यांश की व्याख्या

सूर्य की किरणों गरम हो जाएगा।

संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'मंजरी' के 'झाँसी की रानी' नामक पाठ से लिया गया है। यह प्रसिद्ध उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा के नाटक 'झाँसी की रानी' का हिस्सा है।

प्रसंग – उपन्यासकार ने अंग्रेजों से युद्ध की बेला पर रानी लक्ष्मीबाई के रूप-सौन्दर्य, उसकी सज्जा और घोड़े के विषय में वर्णन किया है।

व्याख्या – अंग्रेजों से रानी का युद्ध होने जा रहा था। रात्रि के बाद सूर्य का उदय हुआ। रानी का सुन्दर मुख सूर्य की किरणों से और ज्यादा चमकने लगा। उसके नेत्रों में चमत्कार भरी दो गुनी चमक थी। रानी ने लाल पोशाक पहनी थी और गले में मोती-हीरों का कण्ठा शोभायमान था। इसके साथ रानी ने म्यान से तलवार निकाली हुई थी जिसकी चमक निराली थी। रानी ने घोड़े को एड़ लगाई। थोड़ी झिझक के बाद घोड़ा तेज दौड़ने लगी। रानी को उसकी क्षमता पर सन्देह हुआ (परन्तु कोई दूसरा विकल्प नहीं था)।

पाठ का सर (सारांश)

अंग्रेजों का बिगुल रानी के कान में सुनाई दिया। तोपों का धड़ाका हुआ। सूर्य निकल चुका था। रानी ने रामचन्द्र देशमुख को आदेश दिया- दामोदर को मेरी पीठ पर बाँधो। इसको सुरक्षित दक्षिण पहुँचा देना। ध्यान रखना अंग्रेज सैनिक मेरी देह को न छू पाएँ। रानी ने जूही को तोपखाने पर जाने के लिए कहा। फिर घोड़े को एड़ लगाई। रानी पूरब की ओर झपटी। रानी के रण कौशल के मारे अंग्रेज जनरल थर्रा गए। रानी के पीछे पैदल सैनिक थे। रानी धीरे-धीरे पश्चिम-दक्षिण की ओर अपनी सेना से मिलने के लिए मुड़ी। दाँतों में लगाम थामकर रानी ने दोनों हाथों से तलवार चलाकर अपना मार्ग बनाया।

दक्षिण-पश्चिम की ओर सोनरेखा नाला था। मुन्दर रानी के साथ थी। रघुनाथ सिंह, रामचन्द्र देशमुख और बीस-पच्चीस लाल कुर्ती सवार रानी को घेरे थे। अंग्रेज घेरे को कम करते जा रहे थे। उसी समय तात्या ने रूहेली और अवधी सैनिकों की मदद से अंग्रेजों के व्यूह पर प्रहार कर दिया। अंग्रेज रानी को छोड़कर तात्या की ओर मुड़ गए। सूर्यास्त होने में कुछ देर थी। रानी के साथ केवल चार सरदार और उनकी तलवारें रह गईं। रामचन्द्र देशमुख, दामोदरराव की रक्षा की चिन्ता में बचाव करके हेड रहा था। रानी ने देशमुख की सहायता के लिए मुन्दर की ओर इशारा किया और स्वयं एक संगीनबर को मारकर आगे बढ़ी।

आठ-दस गोरे सवार रानी के पीछे थे। रानी ने कहा "मेरे शरीर को अंग्रेज न छूने पाएँ।" गुलमुहम्मद ने समझ लिया। वह और भी जोर से लड़ा। "बाई साहब, मैं मेरी" शब्दों के साथ एक अंग्रेज की पिस्तौल से मुन्दर का अन्त हो गया। रघुनाथ सिंह मुन्दर के शव को पीठ पर कसकर घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ा। रानी तेजी के साथ सोनरेखा नाले पर आ गई। घोड़ा अड़ गया। नाला पार न हो सकी। अंग्रेज सवार आ पहुँचे। एक गोरे की गोली रानी की बाईं जाँघ में पड़ी। रानी ने आगे बढ़ने के लिए एक पैर से एड़ लगाई। घोड़ी अड़ा रहा और दोनों पैरों से खड़ा हो गया। रानी को पीछे खिसकना पड़ा। अंग्रेज सवार ने गुल मुहम्मद के आ पहुँचने से पहले ही रानी पर वार कर दिया, जिससे उसके सिर का हिस्सा कट गया। गुलमुहम्मद बाकी के दो-तीन सवारों पर टूट पड़ा जो मैदान

छोड़कर भाग गए। रामचन्द्र देशमुख ने घोड़े से गिरती रानी को सँभाला। दामोदरराव अपनी माता को घायल अवस्था में देखकर रोने लगा। वे रानी के देह को अँग्रेजों से बचाने के लिए तेज रफ्तार से बाबा गंगादास की कुटी में पहुँच गए।